हरिकेशीबल मुनि

लेखक: – डॉ. पदमचन्द्र जी म. सा.

बड़ी साधु वन्दना सचित्र कथायें

भाग 4

Scanned by CamScanner

मुनि हरिकेशी बल

कविकुल शिरोमणि एकभवावतारी आचार्य सम्राट् पूज्य श्री जयमल जी म. सा. की दिव्य काव्य कृति बड़ी साधु वंदना की 14वीं कड़ी में एक ऐसे महापुरुष को श्रद्धायुत नमन किया गया है, जिसने वैदिक संस्कृति में प्रचलित यज्ञ, हवन आदि बाह्य क्रिया-कांडों में आई विकृतियों को हटाकर उनके वास्तविक शुद्ध स्वरूप का विशद् विवेचन किया। वह महापुरुष थे **'मुनि हरिकेशी बल'**।

तत्त्वमनीषी डॉ. पदमचन्द्र जी म. की जादुई लेखनी ने इस चित्रकथा में उन्हीं स्मरणीय महापुरुष के पावन प्रसंग का अपनी सरस शैली में सजीव चित्रांकन किया है।

चांडाल कुल में उत्पन्न हरिकेशी जन्म से ही कुरूप व बेडौल था। स्वभाव से भी रुक्ष होने के कारण वह परिवार, समाज, ग्राम सभी का घृणा पात्र था। एक बार उसने देखा कि एक विषधर सर्प को लोग लाठियों व पत्थरों से मार रहे हैं। जबकि विषहीन दुमुँही सर्प को लोगों ने हाथ से उठाकर कुछ दूरी पर छोड दिया है। इस घटना को देखकर वह सोचने लगा—'लोग दुष्ट स्वभाव व अवगुणी से घृणा करते हैं और सरल स्वभावी गुणी को आदर देते हैं।' उसने आत्मचिंतन प्रारम्भ कर दिया। चिंतन की गहराई में उतरते-उतरते उसे जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न हो गया। उस ज्ञान से अपने पूर्वभव को जानकर उसने निश्चय किया कि वह आत्मसाधना के लिए संयम पथ पर अग्रसर होगा।

हरिकेशी बल ने दीक्षा ग्रहण की और मुनि बन उग्र तप-साधना करने लगे। एक बार विहार करते-करते वे वाराणसी पहुँचे। वहाँ उनकी तपश्चर्या से प्रभावित होकर एक यक्ष उनकी सेवा में रहने लगा। वहाँ की राजकन्या द्वारा उनका अपमान किया गया परन्तु निर्लिप्त मुनि ने उसे सहज ही क्षमा कर दिया।

राजा के दामाद रुद्रदेव द्वारा आयोजित यज्ञ में मुनि हरिकेशी बल मासक्षमण् तप के पारणा हेतु भिक्षार्थ पहुँचे। वहाँ ब्राह्मणों द्वारा मुनिवर को प्रताड़ित किया गया। परन्तु क्षमाशील मुनि ने उन्हें भी क्षमा कर दिया। मुनि हरिकेशी बल ने अपने संयमी जीवन में उत्कृष्ट निर्दोष संयम का पालन करते हुए गहन तपश्चर्या की और अंतिम समय में समस्त कर्म क्षय कर वे सिद्ध-बुद्ध-मुक्त बने।

आशा है कथानक का सरल चित्रमय प्रस्तुतिकरण बाल, युवा, वृद्ध सभी के लिये उपयोगी रहेगा और वे इससे प्रेरणा लेकर अपने विचारों को जात-पात की कुरीतियों से ऊपर उठाने का प्रयत्न करेंगे।

—उपाध्याय प्रवर श्री पार्श्वचंद्र जी म. सा.

- लेखक : डॉ पदमचन्द्र जी म.सा.
- सम्पादक : संजय सुराना
- प्रथमावृत्ति : भादवा सुद 13, वि. सं. 2064, 25 सितम्बर 2007 (आचार्य श्री जयमल जी म. सा. की 300 वीं जयंती)
- प्रतियाँ : दस हजार
- मूल्य : पच्चीस रुपये मात्र

• प्रकाशक : •

श्री जयमल जैन पार्श्व-पद्मोदय फाउण्डेशन, चेन्नई

3A, Vepery Church Road, Chennai-600 007
Mob. : 9444143907

• डिजाइन एवं प्रिंटिंग : •

पद्मोदय प्रकाशन

A-7, अवागढ़ हाउस, अंजना सिनेमा के सामने, एम.जी. रोड, आगरा-2 दूरभाष : 09319203291

Scanned by CamScanner

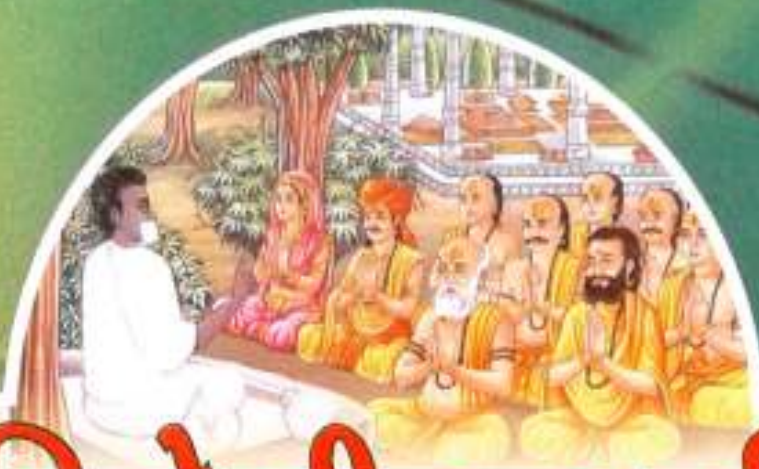

हरिकेशीबल मुनि

आशीर्वाद प्रदाता

जयगच्छाधिपति आचार्यप्रवर श्री शुभचन्द्र जी म. सा.
संयम शिरोमणि पण्डित रत्न उपाध्यायप्रवर
श्री पार्श्वचन्द्र जी म. सा.

लेखक

जयगच्छीय दशम पट्टधर आचार्यप्रवर
श्री लालचन्द्र जी म. सा. के सुशिष्य
डॉ. श्री पदमचन्द्र जी म.सा.

सम्पादक : संजय सुराणा

प्रकाशक : श्री जयमल जैन पार्श्व-पद्मोदय फाउण्डेशन, चैन्नई

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

बल का जन्म 3

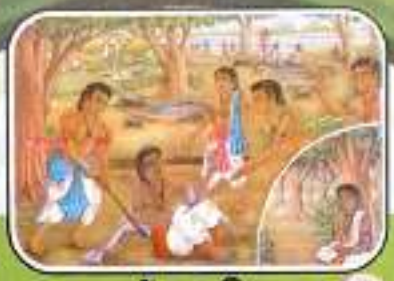
बालकों द्वारा तिरस्कार 5

बल का चिंतन 7

बल का पूर्व जन्म 8

सोम मुनि का जाति व रूप मद 11

आत्म जागृति 13

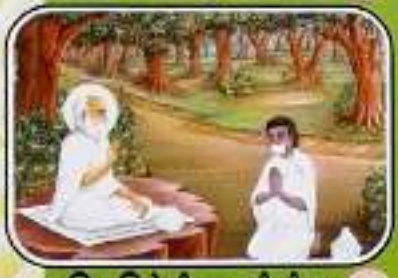
मुनि हरिकेशीबल की दीक्षा 15

उग्र संयम साधना 16

राजकुमारी द्वारा अपमान 17

कंचन कामिनी के त्यागी श्रमण 22

रुद्र देव से विवाह 24

रुद्र देव द्वारा अपमान 26

पण्डितों द्वारा मुनि की पिटाई 28

यक्ष कुपित हुआ 29

क्षमा के सागर मुनि 30

Scanned by CamScanner

हरिकेशीबल मुनि

मुनि बल हरिकेशी, चित्त मुनीश्वर सार।
शुद्ध संयम पाली, पाम्या भवनो पार।।१४।।

(बड़ी साधु वन्दना)

बल का जन्म

एक समय की बात है। गंगा नदी के किनारे सूखी बालुई रेती पर चांडालों की एक बस्ती बसी हुई थी। बस्ती के लोग अपनी उस बस्ती को 'मृतगंगा-बस्ती' के नाम से पुकारते थे। वहाँ बसे हुए चांडाल मुर्दों के कफन का कपड़ा व बाँस आदि उठाने का कार्य करते थे। कई लोग मृत-पशुओं की खाल उतारकर बेचने का कार्य भी करते थे। इन्हें श्वपाक भी कहा जाता था क्योंकि ये लोग श्वान का माँसभक्षण करते थे। ये लोग आकृति से भयंकर और प्रकृति से कठोर एवं असंस्कारी थे।

उस बस्ती के मुखिया का नाम 'बलकोट्ट' और मुखिया की पत्नी का नाम 'गौरी' था। शादी के कुछ वर्षों बाद गौरी गर्भवती हुई और गर्भ समय पूर्ण होने पर उसने एक पुत्र को जन्म दिया। बलकोट्ट ने अपने पुत्र का नाम 'बल' रखा।

Scanned by CamScanner

अपने पूर्वजन्म में जाति व रूपमद किये जाने के कारण बल को इस जन्म में अत्यंत कुरूप चेहरा व बेडौल शरीर प्राप्त हुआ था।

बल जब कुछ बड़ा हुआ और चलना सीख गया तो वह अपने घर से बाहर निकल समान वय के बच्चों के बीच चला जाता। वे बच्चे बाल-क्रीड़ाएँ कर रहे होते और कन्दुक आदि से खेल रहे होते तो बल भी उनके साथ खेलना चाहता। लेकिन अन्य बालक उसे अपने साथ खेल खिलाना व क्रीड़ाएँ करवाना पसन्द नहीं करते थे। क्योंकि एक तो बल स्वभाव से क्रोधी व झगड़ालू था और दूसरा वह अत्यंत ही वीभत्स आकृति वाला कुरूप शरीर का मालिक था।

एक दिन बल पास के मैदान में खेलने गया। वहाँ बस्ती के लड़के विभिन्न खेल खेल रहे थे। बल ने उनसे कहा—"मैं भी खेलूँगा, मुझे भी अपने साथ खिलाओ।" यह सुनकर बालकों ने उसे दुत्कारते हुए कहा—"चल हट यहाँ से।

Scanned by CamScanner

गंगा के पानी में अपनी शक्ल तो देख। कितना काला और बदरूप है तू ? जा भाग जा यहाँ से।"

बालकों द्वारा तिरस्कार

इस तरह दुत्कारने व चिढ़ाने से बल तिलमिला गया और बोला—"क्या कहा, मैं बदसूरत हूँ, काला हूँ।" और वह अत्यंत क्रोध में भरकर सबको गालियाँ देने लगा। गुस्से में अपने हाथ-पाँव पटककर आँखें दिखाने लगा। फिर उसने बालकों की तरफ पत्थर फेंकने शुरू कर दिये। बदसूरत तो वह था ही, गुस्से में वह राक्षस जैसा लगने लगा। खेलने वाले लड़के भी लाठियाँ लेकर आ गए। बल ने मैदान में पड़े पत्थर उठा लिये। बस हो गयी लाठी-मार जंग। बल को कई चोटें आईं। वह गिर गया। बाकी लड़के वहाँ से भाग गए।

घायल बल का मन अत्यंन्त दुःखी हो गया। वह उठा और एक पेड़ के तने से सहारा लगाकर बैठ गया। वह मन ही मन बालकों को कोसने लगा और अपनी स्थिति पर दुःखी होने लगा। वह सोचने लगा—'इन सबसे कैसे बदला लूँ ?' इन्हीं

Scanned by CamScanner

विचारों में मग्न था कि तभी उसे बस्ती से आती आवाजें सुनाई दीं—"मारो ! पकड़ो ! कुचल डालो !"

कुतूहलवश वह भी खड़ा होकर देखने लगा—'क्या हो रहा है वहाँ ?' तभी उसने देखा—एक भंयकर विषधर काला नाग सरपट पेट के बल तेजी से रेंगता चला जा रहा है और बस्ती के लोग उसके पीछे लाठियाँ, पत्थर आदि हाथ में लिए दौड़ रहे हैं। कुछ ही देर में उन्होंने सर्प को चारों ओर से घेर लिया और लाठियों से पीट-पीटकर मार डाला। वे कह रहे थे—"कितना भयंकर जहरीला साँप था, किसी को काट लेता तो, वह काल के गाल में समा जाता।"

संयोगवश कुछ ही देर पश्चात् जाते हुए उन लोगों के पास से ही एक और मोटा सर्प निकला। एक व्यक्ति ने उसे देखा तो चिल्लाया—"बचो ! साँप ! मार डालो इसे भी।" तभी एक अनुभवी व्यक्ति ने कहा—"अरे ! इसे क्यों मारते हो ? यह तो दोमुँहा जाति का सर्प है। यह जहरीला नहीं होता। अत्यंत सीधे स्वभाव का होता है ऐसा सर्प। किसी को नहीं काटता।"

Scanned by CamScanner

वहाँ खेल रहे बच्चों ने सुना तो उनके मन का भय मिट गया। वे उसके निकट आए। एक बड़े लड़के ने उसे अपने हाथ से छूकर तुरंत हाथ हटा लिया कि कहीं यह काट न ले। पर जब कुछ नहीं हुआ तो सभी उसे छूने लगे। वे उस निर्विष दुमुँहे सर्प से खेलने लगे। एक निडर लड़के ने तो हद कर दी। उसे उठाकर अपने गले में डाल लिया। जब सर्प ने कोई प्रतिक्रिया प्रकट नहीं की तो सभी बारी-बारी से उसे लेकर अपने गले में माला की तरह डालने लगे और उस पर हाथ फेरते हुए उसे पुचकारने लगे।

बल का चिन्तन

बल ने दोनों घटनाएँ देखीं। वह विचार करने लगा—'विषधर से सभी डरते हैं। उससे भयभीत बन उसे भगाते हैं या फिर किसी की जान-हानि के भय से उसे पीट-पीटकर मार डालते हैं। लेकिन निर्विष सर्प से कोई भय नहीं खाता। मारने-पीटने के स्थान पर उसे पुचकारा जाता है। बच्चे तक उससे खेलने में

Scanned by CamScanner

मस्त बन जाते हैं। यह है इस संसार का व्यवहार। इससे तो यही स्पष्ट होता है कि जिस व्यक्ति में विष है, जो दुर्जन है, जिसमें क्रोध, मान आदि कषाएँ हैं और जो अपने दुष्ट स्वभाव के कारण शेष लोगों को दुःखी करता है, वह बदले में उन लोगों से अपमान प्राप्त करता है, दुत्कारा व प्रताड़ित किया जाता है। व्यक्ति यदि सीधा-सरल हो, उसमें क्रोधादि दुर्गुण न हों तो यही लोग उससे प्यार करने लगते हैं, उसका सम्मान करते हैं, उसे चाहते हैं।'

इन विचारों के साथ ही बल अपने स्वयं के गुणावगुणों के चिन्तन में उतर गया। उसने विचार किया—'मैं क्रोधी हूँ, झगड़ालू हूँ, दुष्प्रकृति वाला हूँ। मेरे ये दोष ही विष की तरह हैं। मेरे इन्हीं दोषों के कारण मेरी हम-उम्र के लड़के मेरे साथ नहीं खेलते, अपितु वे मुझे प्रताड़ित करते हैं और मारते-पीटते हैं। वास्तविक रूप में तो मेरे प्रति उनके दुर्व्यवहार का कारण मैं स्वयं ही हूँ। जो विषैला होगा, उसका तो यही होना है। मुझे इनका प्यार पाना है, इनके साथ उठना-बैठना और खेलना है तो मुझे निर्विष बनना होगा, मुझे अपना क्रोध और झगड़ालू स्वभाव त्यागना होगा।'

बल ने सोचा कि आज से मुझे निर्विष बनना है, अपने दुर्गुणों का त्याग करना है। सभी का प्यार पाना है।

बल वहीं बैठा रहा और चिन्तन में खोया रहा। वह गहरे चिन्तन में उतर गया और एकाग्रता की चरम स्थिति में पहुँच गया। उसे वहीं जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न हो गया। जातिस्मरण ज्ञान के बल से वह अपने पूर्वजन्म को किसी चलचित्र की भाँति अपने मानस-पटल पर देखने लगा।

बल का पूर्वजन्म

अपने पूर्वभव में बल देवलोक में और उससे पूर्व सोमदत्त पुरोहित के रूप में मनुष्यलोक में था। हस्तिनापुर में रहता था। मथुरा-नरेश शंख राजा जब संसार से विरक्त बन संयम पथ के पथिक बने तो एक बार अपने विहार क्रम में हस्तिनापुर पधारे और मासक्षमण के तप को पूर्ण कर पारणा करने के लिए

Scanned by CamScanner

भिक्षार्थ नगर के उच्च, मध्यम, निम्न कुलों के घरों में पर्यटन करने लगे। घूमते हुए मुनि शंख एक ऐसे स्थान पर पहुँचे, जहाँ एक जनशून्य गली थी। मुनिवर ने गली के ओर-छोर तक कोई जन-संचार नहीं देखा। उन्होंने गली के नजदीक वाले मकान के मुख्य द्वार की ओर देखा, जहाँ सोमदत्त पुरोहित खड़ा था। मुनिश्री ने सोमदत्त से पूछा—"क्या नगर से बाहर जाने का यही रास्ता है ?"

सोमदत्त पुरोहित वेद-वेदांगों का पारंगत विद्वान्, बहुत बड़ा पंडित और एक सुदर्शनीय पुरुष था पर था बड़ा अभिमानी। उसे अपने रूप, अपनी विद्या, अपनी उच्च जाति का बड़ा अभिमान था। वह मुनियों के प्रति ईर्ष्या भाव भी रखता था। मुनिवर के प्रश्न करने पर उसने सोचा—'यह गली तो 'हुतवह-रथ्या' गली है। ग्रीष्म ऋतु के सूर्य के ताप में सुतप्त लोहे के समान यह हर समय अत्यंत गर्म रहती है। इसमें तो कोई व्यक्ति चला जाए तो वह पथ की उष्णता से मूर्च्छित

Scanned by CamScanner

होकर गिर सकता है और मर सकता है। यह मुनि यदि इस पथ से जायें तो अच्छा तमाशा रहेगा।'

यह सब सोचते हुए सोमदत्त पुरोहित ने मुनिवर से कहा—"हाँ ! यहाँ नगर से बाहर ले जाने वाली यही गली है।"

तपस्वी और लब्धि-सम्पन्न शंख मुनि यह सुनकर निश्चल भाव से ईर्यासमितिपूर्वक उसी उष्ण मार्ग पर चल पड़े। वे गली में गए, कुछ कदम बढ़े और फिर निरन्तर स्थिर व शांत गति से प्रगतिमान बने रहे। इधर सोमदत्त पुरोहित तो तमाशा देखने के विचार से मुनि को ही निहार रहा था। वह सोच रहा था—'मुनि अब छटपटाना प्रारम्भ करेंगे, अब नाचेंगे-कूदेंगे, अब गिरेंगे बेहोश होकर धड़ाम से।' पर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। सोमदत्त चकित था—'यह कैसे सम्भव है ? ये मुनि तो जैसे अग्नि-पथ पर नहीं, अपितु चंदन-पथ पर चल रहे हैं। कितने शांत हैं ये ! कैसी स्थिर गति है इनकी !! छटपटाहट तो दूर, चेहरे पर शिकन तक नहीं है इनके। क्या इनके पाँव नहीं जल रहे ? क्या इस उष्ण-पथ की अंगारों-सी दहकती रेत में कोई परिवर्तन हो गया है ? यदि ऐसा है तो ये मुनि महातपस्वी होने चाहिए।'

इन्हीं विचारों में डूबता-उतरता सोमदत्त उस समय अपने को रोक नहीं सका। वह अपने भवन के मुख्य द्वार से बाहर आया और चेहरे पर आश्चर्य के भाव लिए नंगे पाँव ही उस 'हुतवह-रथ्या' गली की तरफ चल दिया। गली के मुहाने तक पहुँचकर डरते-डरते उसने अपना नंगा पाँव गली में बढ़ाया और उसे उष्ण-पथ की मिट्टी पर धीरे से रखकर तुरंत खींच लेना चाहा। उसने सोचा—'मेरा पाँव जल जाएगा। मुनि में संयम-बल हो सकता है, पर मैं तो साधारण व्यक्ति हूँ।'

सोमदत्त अपना पाँव तुरंत हटाना चाहता था पर हटा नहीं पाया। वहाँ की माटी का स्पर्श उसे पूर्णतः शीतल लगा। 'यह सब मुनि के तपोबल का ही प्रभाव है।'—यह सोचकर सोमदत्त पश्चात्ताप करने लगा कि 'उसने मुनि को जला देने की भावना से क्यों उस गली में भेजा ? बहुत भयंकर पाप हुआ है उससे।'

Scanned by CamScanner

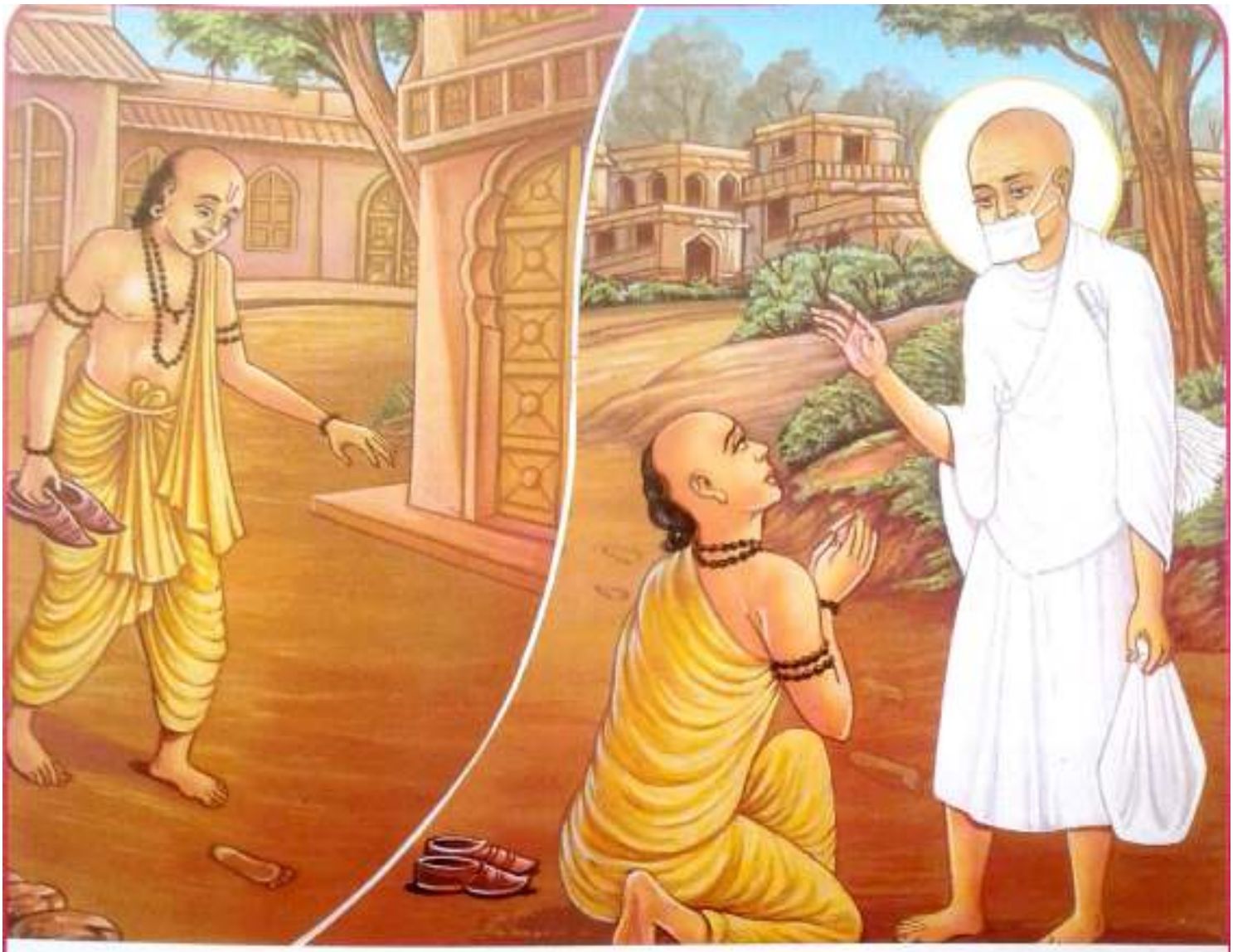

इस प्रकार मन में पश्चाताप का भाव लिए वह सोमदत्त तीव्र गति से गली में दौड़ पड़ा और शीघ्र ही मुनिवर के निकट पहुँच गया। उसने मुनि के चरणों में गिरकर अपनी दुष्टता के लिए उनसे क्षमायाचना की।

मुनि ने उसे कहा कि "सोमदत्त, क्षमा करना तो श्रमण का धर्म है। तुम किसी के प्रति दुर्भावना मत रखो और क्षमा धर्म की शरण ग्रहण करो।" मुनि के तप-तेज और क्षमाशीलता से प्रभावित सोमदत्त पुरोहित ने मुनि का धर्मोपदेश सुनकर उनका शिष्यत्व ग्रहण कर लिया।

सोम मुनि का जाति व रूप मद

श्रमण बनकर भी मुनि सोम को अपने उच्च ब्राह्मण कुल और अपनी सुन्दरता का सदैव अभिमान बना रहता। अवसर पाने पर वह अन्य श्रमणों के समक्ष अपनी सुन्दरता और उच्च कुल तथा दूसरे श्रमणों के निम्न कुल की बात

Scanned by CamScanner

कह देता। जब गुरू को इस बात का पता चला तो उन्होंने मुनि सोम को बुलाकर कहा—"सोम मुनि ! अपने शरीर की सुन्दरता का अहंकार करके दूसरों का अपमान करना श्रमणाचरण के अनुकूल नहीं है। साथ ही ब्राह्मण या शूद्र जाति का जहाँ तक प्रश्न है, तो हे मुनि ! उच्च या निम्न जाति शरीर की होती है। आत्मा की कोई जाति नहीं होती। तप करने वाला शूद्र भी महान् है और पाप करने वाला ब्राह्मण भी निम्न है।"

मुनि सोमदत्त के रक्त के एक-एक कण में अभी भी जाति व रूपमद के भाव समाये हुए थे। गुरु के कथनों का सोमदत्त मुनि पर कोई असर नहीं हुआ। मन में तो उनके मुनिजनों के मैले-कुचैले वस्त्रों के प्रति भी घृणा का भाव था।

अपने संयम-जीवन के अन्तिम समय तक सोम मुनि का यह जाति व रूपमद तथा मुनियों के गंदे वस्त्रों के प्रति जुगुप्सा का भाव विद्यमान रहा। आयुष्य

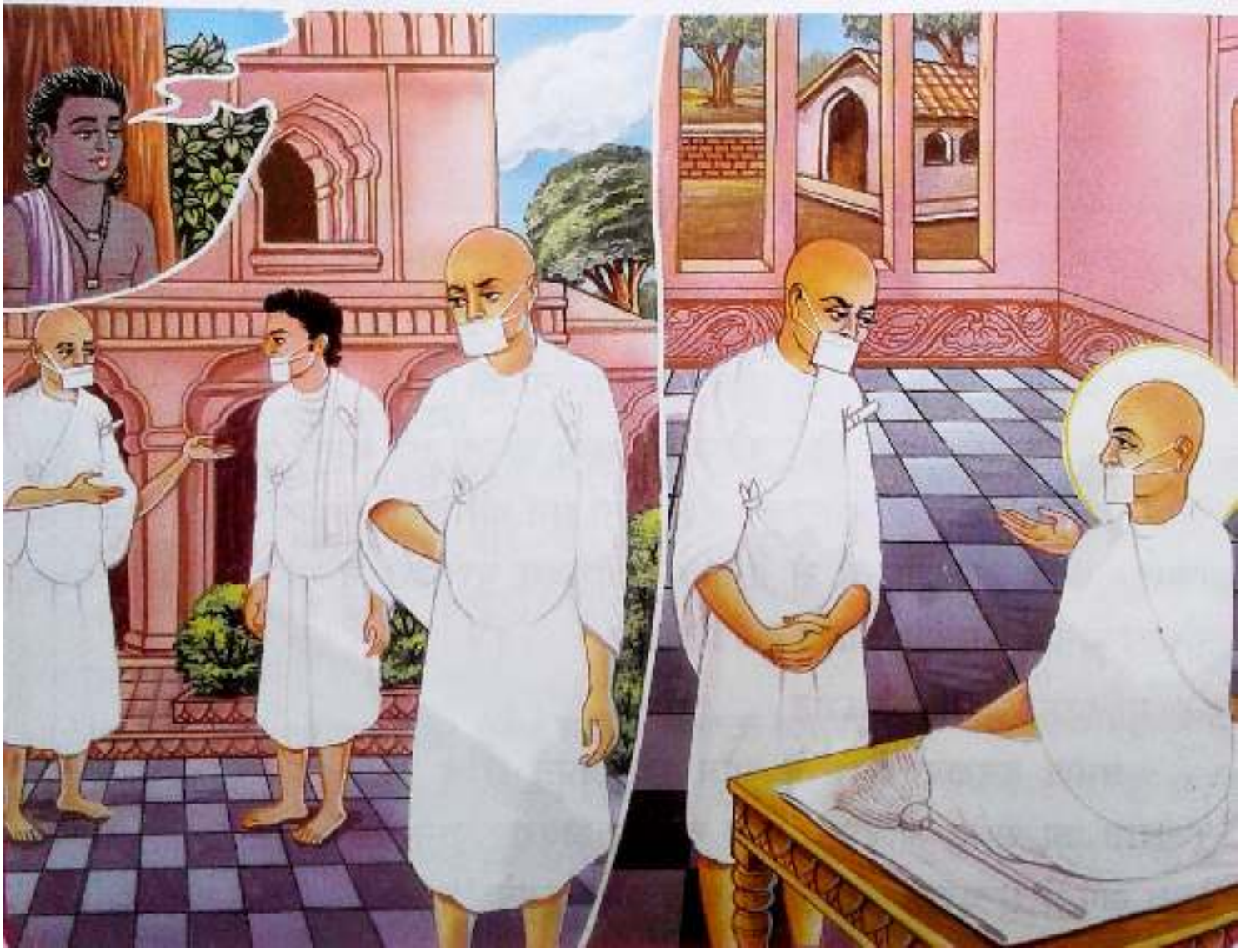

Scanned by CamScanner

पूर्ण होने और मरणधर्म प्राप्त कर लेने तक भी सोम मुनि ने अपने इन अशुभ भावों की आलोचना नहीं की।

देह त्यागने के पश्चात् संयम पालन के प्रतिफल में सोम मुनि देवलोक में गए पर जाति व रूपमद तथा मुनियों के वस्त्रों के प्रति जुगुप्सा भाव के कारण सोम मुनि के जीव ने देवभव से च्यवन कर चांडालाधिपति बलकोट्ट और गौरी के घर में बल के रूप में जन्म पाया।

आत्म-जागृति

अपने पूर्वभव का हाल जानकर बल की आत्मा जागृत बन गई। उसने चिन्तन किया–'उत्कृष्ट संयम पालन एवं तपश्चर्या करने पर भी रूप एवं जाति का अहंकार करने से मुझे इस भव में ऐसी कुरूपता व चांडाल जाति मिली।' फिर उसका चिन्तन इस जन्म की घटनाओं की ओर मुड़ गया–'मेरे सामने ही लोगों

Scanned by CamScanner

ने विषैले सर्प को मार डाला और जो निर्विष दुमुँहा साँप था, उसको किसी ने नहीं मारा। यही बात मेरे साथ भी है। मैं लड़ाकू हूँ। सबके साथ लड़ता हूँ इसलिए लोग मुझे प्रताड़ित करते हैं। सरल और क्षमाशील को सभी प्रेम करते हैं।' उसने क्रोध और अहंकार का त्याग करने का निश्चय किया। बल बहुत समय तक बैठे-बैठे इस घटना पर चिन्तन करता रहा।

संध्या हो गयी, जब बल घर नहीं पहुँचा तो माता को चिन्ता होने लगी। वह उसे ढूँढ़ने गई। एक पेड़ के नीचे बल को चिन्तन में डूबा देख बोली—"बल ! तू कब से यहाँ बैठा है ? चल घर चल।" बल ने माँ की बात सुनी और कहा—"माँ ! मैंने आज एक सत्य समझ लिया है कि भीतर के विष को समाप्त करने पर ही व्यक्ति सभी का प्रिय बनता है। मैंने भी अपने भीतर के क्रोध, अहंकार, घृणा, ईर्ष्या रूपी विष को समाप्त करने का निश्चय कर लिया है। मुझे राह मिल गई है।

Scanned by CamScanner

अब मैं वन में जाकर तपस्या करूँगा और अपना जीवन सफल करूँगा।" उसने बस्ती के सभी बालकों, युवाओं, बुजुर्गों से क्षमायाचना की और फिर संसार के सभी बंधनों को तोड़ वह सीधा घने वन की ओर चल दिया। माता और बस्ती वाले अचम्भे से उसे जाते हुए देखते रहे।

हरिकेशीबल की दीक्षा

घने वन में चलते-चलते उसे एक मुनि तपस्या करते दिखाई दिये। वह उनके पास पहुँचा और मुनि को वन्दन किया। मुनि के पूछने पर बल ने कहा–"मैं आत्म-कल्याण करना चाहता हूँ। मुझे मार्ग दिखाइये।" मुनि ने बल की प्रबल वैराग्य भावना देखी तो उसे दीक्षा दे दी और एक नया नाम दिया– हरिकेशीबल मुनि।

गुरु से दीक्षा लेने के पश्चात् हरिकेशीबल मुनि ने विचार किया–'पूर्वभव में तो कसर रह गई, अब मुझे ऐसी संयम-साधना और तपाराधना करनी है कि

Scanned by CamScanner

कोई कसर न रहे, साधना सफल बन जाए, जीवन कर्मबंधन से मुक्त हो जाए।' ऐसा निश्चय कर दीक्षा के दिवस से ही मुनि बल ने मासक्षमण की तपस्या प्रारम्भ कर दी।

वे प्रमाद का पूर्णतः त्याग कर ध्यान में लीन रहने लगे। घने वनों में, गहन गुफाओं में, नदी के किनारे रात-दिन ध्यान-साधना करते रहते। सूखी नदी की रेत में ध्यान लगाकर सूरज की तपती धूप में आतापना लेते, एक पाँव पर सूर्य-सम्मुख खड़े होकर ध्यान करते। मुनि बल का बल इस तरह तपाराधन एवं संयम-साधना में काम आने लगा।

उग्र संयम साधना

संयम, तप एवं ज्ञान की साधना-आराधना करते हुए हरिकेशीबल मुनि जितेन्द्रिय बन गए। वे ईर्या, भाषा, एषणा आदि पाँच समितियों से सीमित और मन, वचन, काय को पूर्णतः वश में करके तीन गुप्तियों से गुप्त हो गये।

एक बार हरिकेशीबल मुनि ग्रामानुग्राम विहार करते हुये वाराणसी नगरी पधारे और नगरी के बाहर तेंदु पत्तों के सघन वृक्षों वाले विशाल तेंदुक उद्यान नामक बाग में विराजमान हुए। उद्यान को जनशून्य और पूर्ण शांत देखकर मुनि ने उसे अपनी ध्यान-साधना के योग्य समझा और वे वहीं एक विशाल तेंदुक वृक्ष के तले ध्यानलीन बन गए।

उसी वृक्ष पर एक गण्डीतिन्दुक नामक यक्ष निवास करता था। कुछ दिन तो उसने वृक्ष तले ध्यानस्थ मुनि पर विशेष ध्यान नहीं दिया। पर जब कई दिन व्यतीत होने पर भी मुनि वहीं अडिग ध्यानस्थ खड़े रहे तो यक्ष चिन्तित होकर विचार करने लगा—'कहीं यह मुनि मुझे यहाँ से भगाना तो नहीं चाहता ?' ऐसा सोच यक्ष ने मुनि को उस वृक्ष के नीचे से हटाने का निश्चय किया और भाँति-भाँति के विकराल व हिंसक पशुओं का रूप धारण कर, डरावनी आवाजें पैदा कीं और मुनि को डराने का प्रयास किया। विकराल राक्षस का रूप भी धारण कर भयानक अट्टहास किया, परन्तु मुनि अविचलित ध्यानमग्न खड़े रहे।

Scanned by CamScanner

अपने हर प्रयत्न को असफल जाता देख यक्ष को आश्चर्य हुआ—'अरे यह मुनि तो डरता ही नहीं है। वैसा ही ध्यानमग्न खड़ा है।' तब यक्ष ने ध्यान लगाया—'ओह ! ये महान् तपस्वी मुनिराज हैं। मुझसे भूल हो गई। मुझे तो इनकी सेवा करनी चाहिए।' उस दिन से यक्ष दिन-रात वहीं रहकर मुनिवर की वैयावृत्य (सेवा) करता। आगमज्ञों ने सच ही कहा है कि जिनके मन में धर्म हो, देव भी उनकी सेवा करते हैं। गण्डीतिन्दुक यक्ष भी हरिकेशीबल मुनि का पूर्ण भक्त बन गया।

राजकुमारी द्वारा अपमान

एक दिन वाराणसी के महाराज कौशालिक की पुत्री राजकुमारी भद्रा अपनी सखी-सहेलियों के साथ गण्डीतिंदुक यक्ष की पूजा करने के लिए आरती की सामग्री व पूजा का थाल लेकर तेंदुक उद्यान में आई। उद्यान में बने यक्षायतन में उसने यक्ष की पूजा-अर्चना की, आरती उतारी। पूजा करने के पश्चात्

Scanned by CamScanner

राजकुमारी व उसकी सखी-सहेलियाँ वापस आ रहीं थीं कि अचानक पेड़ के नीचे ध्यानस्थ मुनि पर राजकुमारी की नजर पड़ी—बेडोल एवं कुरूप शरीर, मलिन वस्त्र, अत्यंत अदर्शनीय इन मुनि के रूप को देखते ही राजकुमारी का मन घृणा से भर उठा—"ओह ! कितना घिनौना और कुरूप साधु है ? थू...थू...। इसे यहाँ से भगाओ।" राजकुमारी ने मुनि पर थूक दिया।

हरिकेशीबल मुनि तो क्षमा के सागर थे। मान-अपमान की भावनाओं से वे ऊपर उठ चुके थे। राजकुमारी द्वारा किए गए इस घृणित कार्य का मुनिवर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वे वैसे ही ध्यानस्थ खड़े रहे। पर तिन्दुक यक्ष जो मुनिवर की सेवा में रह रहा था, राजकुमारी के इस घृणित एवं अक्षम्य व्यवहार को देखकर तिलमिला उठा और राजकुमारी को उसके दुष्कृत्य का फल चखाने के लिए उसके शरीर में प्रविष्ट हो गया।

Scanned by CamScanner

मुनि पर थूककर राजकुमारी ज्यों ही मुड़ी, उसके हाथ से पूजा की थाली छूटकर धरती पर गिर गई। वह स्वयं भी चक्कर खाकर औंधे मुँह जमीन पर आ गिरी। कुछ देर पश्चात् उठकर वह नाचने लगी। नाचना बंद कर वह रोने लगी। रोते-रोते वह उछल-कूद करने लगी। कुछ समय बाद उछल-कूद बंद कर वह पागलों की तरह ही-ही करके दाँत निपोरने लगी। कभी वह आँखें तरेरती, तो कभी चिंघाड़ती। सखियाँ डर गईं। उन्हें लगा कि राजकुमारी पागल हो गई है। दो सखियाँ दौड़ती हुई राजमहल में पहुँचीं। राजमहल में राजकुमारी के पागल होने की सूचना फैलते ही हड़कम्प मच गया। राजा तुरन्त रानी और दासियों के साथ उद्यान में पहुँचा। वहाँ राजकुमारी को विचित्र हरकतें करते देख दासियों को आदेश दिया—"लगता है कोई देव प्रकोप हो गया है। इसे महल में ले चलो।"

दासियाँ राजकुमारी को पकड़कर राजमहल में ले आईं। राजा ने कुशल वैद्यों को बुलाया। वैद्यों ने राजकुमारी की जाँच की, पर वे उसकी बीमारी, उसके पागलपन का कारण नहीं समझ पाए। राजा ने तांत्रिकों व ओझाओं को बुलाया। ओझाओं ने झाड़-फूँक की, पर राजकुमारी ठीक नहीं हुई। कई दिनों तक इलाज चलता रहा। परन्तु सब प्रयत्न विफल रहे। एक दिन अचानक राजकुमारी के शरीर में प्रविष्ट यक्ष प्रकट हुआ और बोला—"सुनो ! मैं तेंदुक उद्यान का तिन्दुक यक्ष हूँ। वहाँ वृक्ष के नीचे तप में लीन मुनि के उत्कृष्ट तप एवं संयम-साधना के कारण हर पल मैं उनकी सेवा में रहता हूँ। इस मूर्ख राजकुमारी ने मुनिवर पर थूका है। महामुनि का घोर अपमान किया है। मैं मुनिश्रेष्ठ का यह अपमान नहीं सह सकता। मैंने ही राजकुमारी के शरीर में प्रविष्ट होकर उसकी यह दशा की है।"

यक्ष की बात सुनकर राजा कौशालिक ने अपनी कन्या के अपराध के लिये यक्ष से क्षमायाचना की और कहा—"इस कन्या से अब तो जो गलती हुई सो हुई। आप बड़े हैं, कृपा कर अपनी माया समेटिये, मेरी पुत्री का शरीर छोड़ दीजिए।" इस पर यक्ष ने कहा—"राजन् ! अपराध की सजा तो मिलनी ही चाहिए। यदि तुम अपनी इस कन्या का विवाह मुनिराज से करने का वचन दो तो मैं इसका शरीर त्याग सकता हूँ।"

Scanned by CamScanner

राजा विवश था। अपनी कन्या को वह इस दशा में नहीं देख सकता था। उसने यक्ष को वचन दिया—"ठीक है यक्षराज ! मैं अपनी इस सुकोमल कन्या को दुल्हन के रूप में सजाकर मुनि-चरणों में समर्पित कर दूँगा।" राजा का वचन पाकर यक्ष राजकुमारी के शरीर से निकलकर अन्तर्ध्यान हो गया।

यक्ष के निकलते ही राजकुमारी जैसे गहरी निद्रा से जगी हो। वह उठकर बैठ गई और कहने लगी—"कहाँ हूँ मैं ? क्या हुआ है मुझे ? आप सब लोग मुझे इस तरह क्यों घेरे हुए हैं ?" राजा कौशालिक ने राजकुमारी को सारी घटना सुनाकर कहा—"तपस्वी मुनि का अपमान कर तुमने जो अपराध किया है उसके प्रायश्चित्त में तुम्हें उन मुनिवर की पत्नी बनकर जीवनभर सेवा करनी होगी। ऐसा नहीं किया तो यक्ष देव तुम्हें जीवित नहीं छोड़ेंगे।" राजकुमारी भद्रा ने सिर झुकाकर अपने अपराध का प्रायश्चित्त लेना स्वीकार कर लिया।

Scanned by CamScanner

अब राजकुमारी भद्रा को दुल्हन की तरह सजाया गया। बाजे-गाजे के साथ बहुत-सा दहेज, अनेक बहुमूल्य उपहार आदि लेकर राजा कौशालिक अपने राज-परिवार के साथ तेंदुक उद्यान पहुँचा। वृक्ष तले ध्यानस्थ मुनि के समक्ष राजा ने राजकुमारी को दुल्हन के वेश में खड़ा किया और हाथ जोड़कर मुनिवर से विनती की—"हे महामुने ! अज्ञानवश इस राजकुमारी ने आपका घोर अपमान करके अक्षम्य अपराध किया है। मुनिवर ! आप तो महान् हैं, क्षमाशील हैं। मैं और मेरी कन्या आपकी इस आसातना के लिए क्षमा माँगते हैं। आप इस कन्या को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार कीजिए।

हरिकेशीबल मुनि ने अपनी आँखें खोलीं और बोले—"राजन् ! पहली बात तो यह कि मुनि मान-अपमान की भावनाओं से ऊपर होते हैं। अतः मेरा कोई अपमान नहीं हुआ। इस कारण प्रायश्चित्त का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। दूसरी बात यह कि हम जैन संत पंचमहाव्रतधारी होते हैं, कंचन-कामिनी के पूर्णतः त्यागी होते हैं। मन, वचन और काया से भी इनकी कामना नहीं करते। नवजात

Scanned by CamScanner

कन्या से लेकर मृत्यु-मुख में प्रवेश कर रही वृद्धा तक का स्पर्श भी जैन-संतों के लिए अकल्पनीय है। अतः विवाह की बात करना ही व्यर्थ है।"

कंचन कामिनी के त्यागी श्रमण

हरिकेशीबल मुनि का कथन सुनकर, राजा ने यक्ष द्वारा कही गई सम्पूर्ण घटना सुनाते हुए कहा—"मुनिवर ! मैंने यक्ष को वचन दिया है कि अपनी कन्या आपके श्रीचरणों में समर्पित करूँगा। राजकुमारी भद्रा भी आपको पति रूप में स्वीकार करने को तैयार है।"

तभी पास खड़ी राजकुमारी भद्रा ने निवेदन किया—"मुनिराज ! यह मेरा दुर्भाग्य ही था कि मैं आपका घोर अपमान कर बैठी। मुझ अभागी पर कृपा कीजिए। मुझे अपने चरणों में स्थान देकर यक्ष के प्रकोप से बचाइए।"

दुःखी और भयभीत राजकुमारी भद्रा के वचन सुनकर मुनि ने उसे बताया कि वे पूर्ण ब्रह्मचारी श्रमण हैं। अतः संसार की सभी स्त्रियाँ उनके लिए माता व बहनों के समान हैं। फिर बोले—"देवानुप्रिये ! भविष्य में यदि तुम कोई भूल नहीं

Scanned by CamScanner

करोगी तो यक्ष दुबारा तुम पर कोई प्रकोप नहीं करेगा। रही पाणिग्रहण कर संसार बसाने की बात तो हे महाभाग्या ! यह सारा संसार दाह-दावानल है। धर्म ही इसमें सारभूत शरण-स्थल है, अतः संसार के हर प्राणी को धर्म की छत्रछाया ग्रहण कर मुक्ति-पथ की ओर लक्ष्य बनाना चाहिए।"

उसी समय यक्ष ने प्रकट होकर आकाशवाणी की—"ऐ रूपवती भद्रा ! तेरा यह रूप, यह सौन्दर्य, यह शृंगार मुनि को रिझा नहीं सका। यह सब व्यर्थ है। जब ये मुनि तक तुम्हें नहीं चाहते तो अब भला तुम्हें कौन चाहेगा ? मुनिवर तुम्हें क्षमा कर चुके हैं, अतः तुम पुनः अपने महलों में चली जाओ। मैं भी तुम्हें मुक्त करता हूँ।" यह कहकर यक्ष अन्तर्ध्यान हो गया।

राजकुमारी भद्रा मुनि को प्रणाम करके अपने पिता राजा कौशालिक के साथ राजमहल में वापस चली आई।

अब राजकुमारी के विवाह का प्रश्न राजा को परेशान करने लगा—'मुनि को दी गई और उनके द्वारा अस्वीकृत इस कन्या के साथ कौन विवाह करेगा ?'

Scanned by CamScanner

राजा ने राजपंडितों को बुलाकर अपनी समस्या उनके समक्ष रखी। राजपंडितों ने विचार-विमर्श कर राजा से कहा—"महाराज ! संत-मुनि द्वारा अस्वीकृत अपनी इस कन्या का दान आप किसी ब्राह्मण को कर सकते हैं। वेदों में बताया है कि ब्राह्मण भी ऋषि संत-महंत तुल्य होते हैं।"

रुद्रदेव से विवाह

समाधान पाकर राजा ने अपनी पुत्री भद्रा का विवाह राज्य के राजपुरोहित रुद्रदेव के साथ कर दिया। रुद्रदेव राजकीय यज्ञशाला का अधिपति था। राजकुमारी को अपनी पत्नी के रूप में पाकर वह बहुत प्रसन्न हुआ। उन दोनों का दाम्पत्य जीवन आनंद और सुख के पलनों में झूलते हुए व्यतीत होने लगा।

एक बार राज्य में एक विशाल यज्ञ का आयोजन प्रारंभ किया गया। यज्ञ का सम्पूर्ण कार्य रुद्रदेव को सम्पन्न करवाना था। राजपुरोहित रुद्रदेव ने

Scanned by CamScanner

नगर के समस्त पंडितों को बुलाकर उन्हें यज्ञ के विभिन्न विधि-विधानों का उत्तरदायित्व सौंपते हुए यज्ञशाला की व्यवस्था का कार्य अपनी पत्नी राजकुमारी भद्रा के सुपुर्द किया।

संयोगवश जितेन्द्रिय हरिकेशीबल मुनि एक दिन मासक्षमण के पारणा हेतु भिक्षार्थ तेंदुक उद्यान से निकलकर नगर के उच्च, मध्यम, निम्न कुलों में भ्रमण करते हुए उसी यज्ञ-मंडप में पहुँच गए।

मंडप में यज्ञ कार्यों में लगे जातिमद में गर्वित, अजितेन्द्रिय व हिंसक उन पंडितों ने तप से सूखे हुए शरीर तथा जीर्ण व मलिन वस्त्र धारण किए, वैसे ही उपकरण लिये उन मुनि को यज्ञ-स्थल में प्रवेश करते देखा, वे अनार्य उन महामुनि का उपहास उड़ाते हुए कहने लगे—"अरे अदर्शनीय वीभत्स रूप वाले, काले-कलूटे ! तू कौन है ? यहाँ तू किस आशा से आया है ? मलिन वस्त्र और धूल-धूसरित शरीर में भूत की तरह दिखाई देने वाले ! शीघ्र यहाँ से वापस चला जा। किसी कूड़े के ढेर से उठाए हुए जीर्ण चिथड़े धारण करने वाले ! यहाँ क्यों खड़ा है ?"

समभावी मुनि यह सब सुनकर भी शांत ही रहे पर मुनि के साथ जो तिन्दुक यक्ष था, उसने मुनि के शरीर में प्रविष्ट होकर कहा—"मैं श्रमण हूँ। संयमी और ब्रह्मचारी हूँ। मैं पूर्ण अपरिग्रही हूँ। मैं भिक्षाकाल में सद्गृहस्थों के द्वारा उनके स्वयं के लिए बनाए गए आहार में से कुछ अंश पाने के लिए घर-घर भिक्षाटन करता हूँ। यहाँ भी इसी कारण से आया हूँ। इस याचना जीवी तपस्वी को भी आपके लिए बने भोजन से कुछ मिल जाए।"

तभी एक ब्राह्मण ने उसे पहचान लिया और जोर से बोला—"अरे ! यह तो चांडाल जाति का है। राम ! राम ! यज्ञ-मंडप में प्रवेश करके इसने तो समस्त यज्ञ भूमि को ही अपवित्र कर दिया। इस पर भी इसकी हिम्मत तो देखो अपने को तपस्वी बताकर भिक्षार्थ भोजन की याचना कर रहा है।"

मुनि शरीर में प्रविष्ट यक्ष ने कहा—"मैं गृह त्यागी श्रमण हूँ। भिक्षाजीवी हूँ, अतः मुझे भिक्षा में भोजन देने से आप लोग पुण्यार्जन करेंगे।"

यज्ञशाला का स्वामी रुद्रदेव भी तब तक वहाँ पहुँच गया। मुनि की बात सुनकर क्रोध में लाल-पीला होकर वह बोला—"घर छोड़कर मुनि बनने से तुम्हारी जाति तो नहीं बदल गई। हो तो तुम चांडाल कुल के ही। सुनो बल ! यह भोजन

Scanned by CamScanner

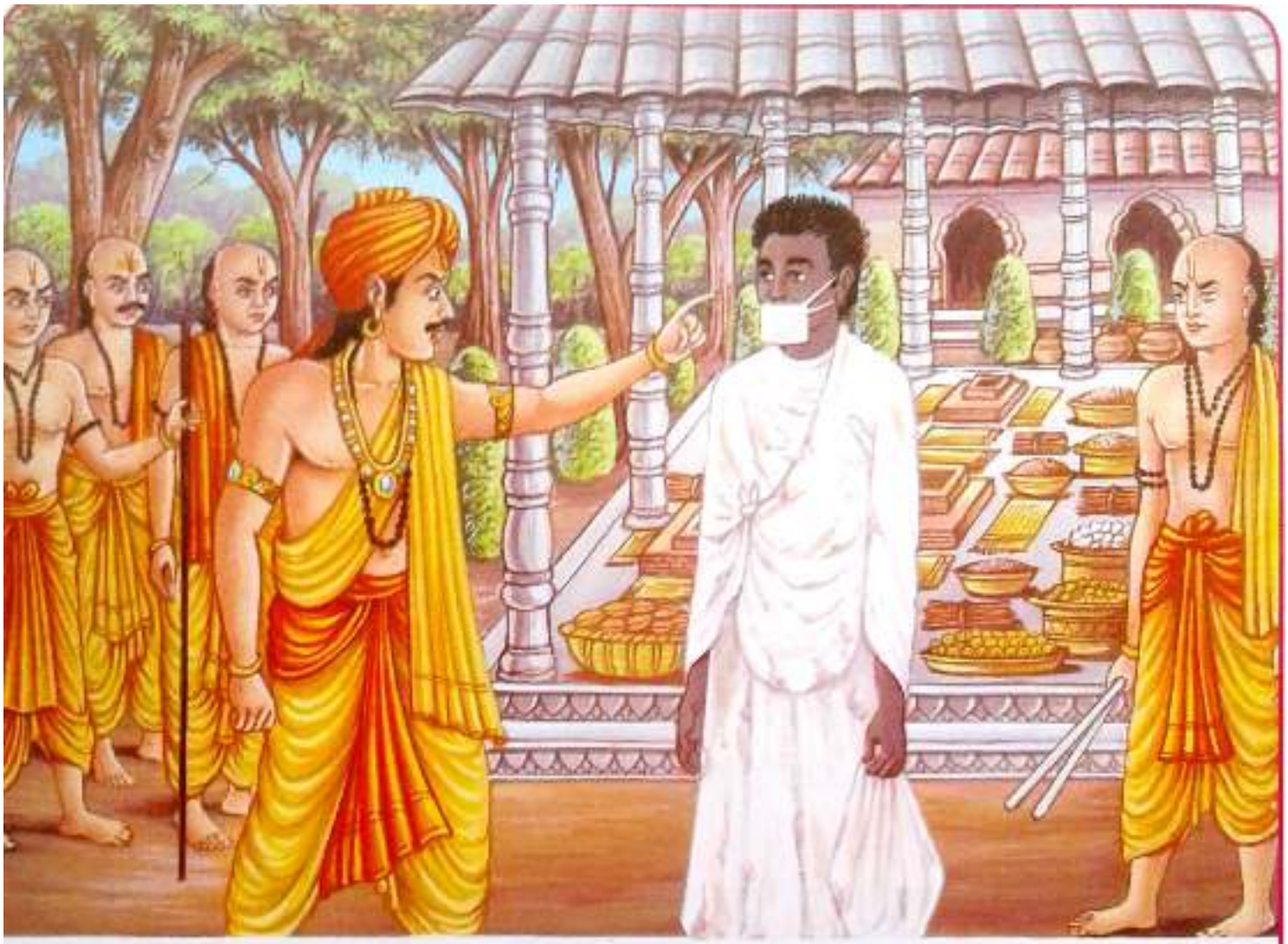

तुम्हें नहीं मिल सकता। यह केवल ब्राह्मण के लिए है। शूद्र होकर तुम इसकी कामना भी मत करो। अच्छा हो तुम यह स्थान त्याग दो।"

मुनि के शरीर में स्थित यक्ष ने कहा—"हे रुद्रदेव ! जैसे किसान उच्च-निम्न, हल्की-भारी, अधिक उपजाऊ और कम उपजाऊ इन सभी भूमियों में बीज बोता है, उसी प्रकार तुम भी श्रद्धापूर्वक मुझे दान दो। मैं भी पुण्य-क्षेत्र हूँ। तुम्हें श्रमण को भिक्षादान का यथार्थ व यथेष्ट फल मिलेगा।"

रुद्रदेव द्वारा अपमान

रुद्रदेव बोला—"शूद्र बल ! तुम पुण्य-क्षेत्रों को क्या जानो ? हम जानते हैं पुण्य-क्षेत्र ब्राह्मण और चौदह विद्याओं से युक्त ही उपजाऊ क्षेत्र होते हैं। तुम्हारे जैसे शूद्र तो कूड़ेदान से भी गए बीते होते हैं।

मुनि के शरीर में स्थित यक्ष ने कहा—"विप्र रुद्रदेव ! जिन ब्राह्मणों के जीवन में हिंसा, असत्य, क्रोध, अहंकार आदि भरा हो ऐसे आचारहीन ब्राह्मण

Scanned by CamScanner

पुण्य-क्षेत्र नहीं होते, वे अयोग्य पात्र और पाप-क्षेत्र कहे गए हैं। तुम जैसे ब्राह्मण वेद तो पढ़ लेते हैं पर उनके वास्तविक अर्थ को नहीं जानते। अतः तुम तो इस जगत् में केवल वाणी का भार वहन करना जानते हो। जो मुनि ऊँच, नीच, मध्यम घरों में (समभावपूर्वक) भिक्षाटन करते हैं, वे ही उत्तम-क्षेत्र हैं।"

मुनि के मुख से निकले इन यक्ष-वचनों को सुनकर क्रुद्ध व अप्रसन्न रुद्रदेव ने कहा—"शूद्र बल ! तुम अपनी यह बकवास अब बन्द करो। यहाँ बना अन्न-भोजन आदि भले ही सड़कर नष्ट हो जाए पर तुम्हें तो हम किसी भी दशा में भिक्षा नहीं देंगे। तुम जैसे अपवित्र लोगों को देने से तो अच्छा यही है कि इसे कुत्तों को खिला दिया जाए।"

तब यक्ष ने कहा—"विप्रदेव ! यह तुम्हारा अज्ञान और अविवेक बोल रहा है। अपने क्रोध और अहंकार को छोड़कर यदि विचार करो तो सत्य समझ में आ जायेगा। साधु का रंग-रूप-कुल नहीं देखा जाता। उसका तो त्याग देखा जाता है। त्यागी आत्मा को दान देने से ही पुण्य लाभ होता है। मुझ जैसे पाँच समिति और तीन गुप्ति के साधक जितेन्द्रिय मुनि को एषणीय दान नहीं देने पर यज्ञ से यथार्थ-यथेष्ट फल की प्राप्ति संभव नहीं है।"

ये ज्ञान भरी गम्भीर बातें रुद्रदेव ने सुनीं तो विद्यामदांध वह राजपुरोहित आग-बबूला हो गया। गुस्से से काँपते हुए, लाल-पीली आँखें निकालते हुए उसने उच्च स्वर से कहा—"अरे ! है कोई यहाँ ? निकालो इसे यहाँ से। धक्के मार-मारकर भगा दो इसे यज्ञ-मंडप से बाहर।"

इतना कहकर रुद्रदेव राजपुरोहित यज्ञ-मंडप में चारों ओर देखने लगा। वह जानना चाहता था कि उसके कथन के अनुसार कार्य होता है या नहीं।

अपने यज्ञाधिपति का रुख देखकर और उनकी भावना को पहचानकर यज्ञ में आए अनेक उपाध्याय उन मुनि की ओर बढ़े। उनके पीछे-पीछे उन उपाध्यायों से पढ़ने वाले वेदपाठी छात्र भी हो गए। एक उपाध्याय ने हरिकेशीबल मुनि के निकट आकर कहा—"जो जन्म से शूद्र होता है, वह मरने तक शूद्र ही रहता है, यह हम ब्राह्मणों का वेद-वाक्य है। शायद तुमने इसे कभी सुना नहीं, इसीलिए मुनि बनने का पाखंड किया और इस यज्ञ-मंडप में आने का दुस्साहस किया। अब जैसा किया, उसका वैसा फल तो तुम्हें चखना ही होगा।"

Scanned by CamScanner

मुनि-पिंड में स्थित यक्ष बोला—"जन्मना जायते शुद्रः संस्कारात् द्विज उच्यते।" अरे उपाध्याय ! जन्म से तो सभी शूद्र के रूप में ही आते हैं, पर अच्छे संस्कार आने पर उनका दूसरी बार जन्म हो जाता है और वे शूद्र से द्विज अर्थात् ब्राह्मण कहलाने के अधिकारी हो जाते हैं। लगता है आप लोगों ने संस्कार प्राप्त नहीं किए हैं, अतः आप लोग द्विज कहलाने के अधिकारी नहीं हैं। असंस्कारी होने से आप सभी तो अभी भी शूद्र ही हैं।"

पंण्डितों द्वारा मुनि की पिटाई

उपाध्याय ने यक्ष की पूरी बात सुनने से पहले ही अपना डंडा सँभाल लिया। आगे बढ़कर उसने मुनि पर डंडे का वार किया। अन्य उपाध्यायों एवं उनके छात्रों ने भी अपने-अपने हाथ जमाए। रसोईए और अन्य कर्मचारी भी कड़छे, चिमटे आदि लेकर वहाँ आ गए। सभी ने मुनि को मारा-पीटा। लकड़ी, कड़छे व चिमटे के प्रहार चल ही रहे थे कि तभी वहाँ राजा कौशालिक की सुन्दरी कन्या भद्रा आ गई। उसने उन संयमी मुनि को देखा, पहचाना। उपाध्यायों, कुमारों, रसोइयों को रोकते हुए कहा—"रुक जाइए सभी। यह क्या अनर्थ कर रहे

Scanned by CamScanner

हैं सब लोग ? क्या कोई भी इन महामुनि को नहीं जानता ? ये वही उग्र तपस्वी हैं, संयमी और ब्रह्मचारी हैं, जिन्होंने मेरे पिता राजा कौशालिक के द्वारा उस समय मुझे दिए जाने पर भी नहीं चाहा। मेरे पिता ने मुझे इन मुनि को दे दिया था, किन्तु मुनि ने मुझे स्वीकार नहीं किया क्योंकि ये कनक-कामिनी के पूर्णतः त्यागी हैं। इन जितेन्द्रिय महात्मा की इस तरह अवहेलना मत करो। ऐसा न हो कि ये तुम सबको अपने तपःतेज से भस्म कर दें।"

यक्ष कुपित हुआ

भद्रा ने सभी को शांत बनाने का प्रयत्न किया, पर तब तक मुनि की सेवा में लगे हुए यक्ष को क्रोध आ गया। उसने हाथ उठाया, उसमें से आग की चिंगारियाँ निकलने लगीं। मुनि को पीट रहे सभी लोगों को भूमि पर गिरा दिया। भूमि पर गिरकर वे खून की उल्टियाँ करने लगे। यक्ष प्रकोप से कई ब्राह्मणों के मस्तिष्क पीठ की ओर घूम गए, कईयों की बाहें फैलकर विद्रूप बन गईं, कईयों की जीभ बाहर निकल आँईं, कईयों की गर्दन टेढ़ी हो गई और कई पागलों की तरह

Scanned by CamScanner

उछलने-कूदने व चीखने-चिल्लाने लगे—"बचाओ ! मर गये....! यह मुनि तो चमत्कारी हैं।"

रुद्रदेव यह देखकर घबरा गया। वह तुरन्त अपनी पत्नी भद्रा के साथ मुनिवर से हाथ जोड़कर कहने लगा—"भंते ! हमसे अपराध हुआ, हमें क्षमा कीजिए। आप क्षमा के सागर हैं, शांत-मूर्ति हैं। अतः अपना क्रोध शांत करिए और इन सभी को पुनः पहले की तरह ही बना दीजिए।"

क्षमा के सागर मुनि

हरिकेशीबल मुनि ने हाथ उठाकर कहा—"देवानुप्रिय ! हम जैन मुनि समभावी होते हैं। मैंने इन पर क्रोध नहीं किया है। यह कार्य उस तेंदुक वृक्षवासी यक्षदेव का है, जो मेरी सेवा में रहता है।"

रुद्रदेव ने पुनः क्षमायाचना की—"हे महाभाग ! हम मूढ़ अज्ञानी हैं। हमें क्षमा करें।"

रुद्रदेव को मुनि से क्षमा माँगता देख यक्ष ने जमीन पर गिरे सभी ब्राह्मण कुमारों को पूर्णतः स्वस्थ कर दिया।

Scanned by CamScanner

फिर रुद्रदेव और भद्रा ने अन्तर्मन से मुनिवर से आहारदान की भावना प्रकट की। हरिकेशीबल मुनि ने भी उनके अनुग्रह पर अपने मासक्षमण के पारणे योग्य निर्दोष आहार-पानी ग्रहण किया। तपस्वी मुनि के आहार ग्रहण करने पर देवों ने आकाश में 'अहो दानम्, अहो दानम्' का उद्घोष किया। देव-दुंदुभियाँ बजीं, गगन से अचित्त फूलों की वृष्टि हुई। दिव्य-रत्न एवं स्वर्ण-मुहरें बरसने लगीं।

सभी ब्राह्मणों व अन्य उपस्थित लोगों ने उन महामुनि का जयघोष किया। रुद्रदेव व अन्य ब्राह्मणों ने यह माना कि संसार में जाति की नहीं, त्याग-तप व संयम की महत्ता है।

इस घटना के दूसरे ही दिन राजपुरोहित रुद्रदेव अपने सभी छात्रों, अध्यापकों व यज्ञाचार्य-पंडितों आदि को साथ लेकर हरिकेशीबल मुनि के पास तेंदुक उद्यान में आया। मुनिवर को वन्दना कर उनसे पूछा—"हे तपोधन ! हम यज्ञ कैसे करें ?"

मुनिवर ने कहा—"अपनी आत्मा को यज्ञ-कुंड मानकर उसमें तप की ज्योति को प्रज्वलित करो, शुभ प्रवृत्तियों व शुभ विचारों की उसमें आहुतियाँ दो, यही सच्चा यज्ञ है।"

रुद्रदेव ने फिर प्रश्न किया—"यज्ञ करने के लिए हम शरीर की शुद्धि करते हैं और पाप-मुक्ति के लिए तीर्थ-स्नान करते हैं। हे पूजनीय ! आप किस प्रकार अपनी शुद्धि करते हैं ?"

हरिकेशीबल मुनि ने बताया—"देवानुप्रिय ! मैं अकलुषित और शुक्ल लेश्या वाले जलाशय में नहाकर, ब्रह्मचर्य रूप शांति तीर्थ में डुबकी लगाकर कर्म-मल को दूर करके विशुद्ध होता हूँ। तुम भी ऐसा ही करो। सांसारिक तीर्थ तो मात्र बाह्य-शुद्धि कर सकते हैं।"

मुनि ने यह भी कहा कि जो सदाचारी और संयमी हो वही सच्चा ब्राह्मण है। शुद्धात्मा बनना है तो धर्मरूपी तालाब में ब्रह्मचर्य रूपी शांति तीर्थ पर क्रोधादि कषायों को शांत बनाना चाहिए। जो शुभ भावों रूपी जल में स्नान करता है, वह सदा पवित्र रहता है। आत्मा शुद्धि के लिए तप, संयम, समता, सदाचार, ध्यान और भावों की विमल धारा की जरूरत है।

Scanned by CamScanner

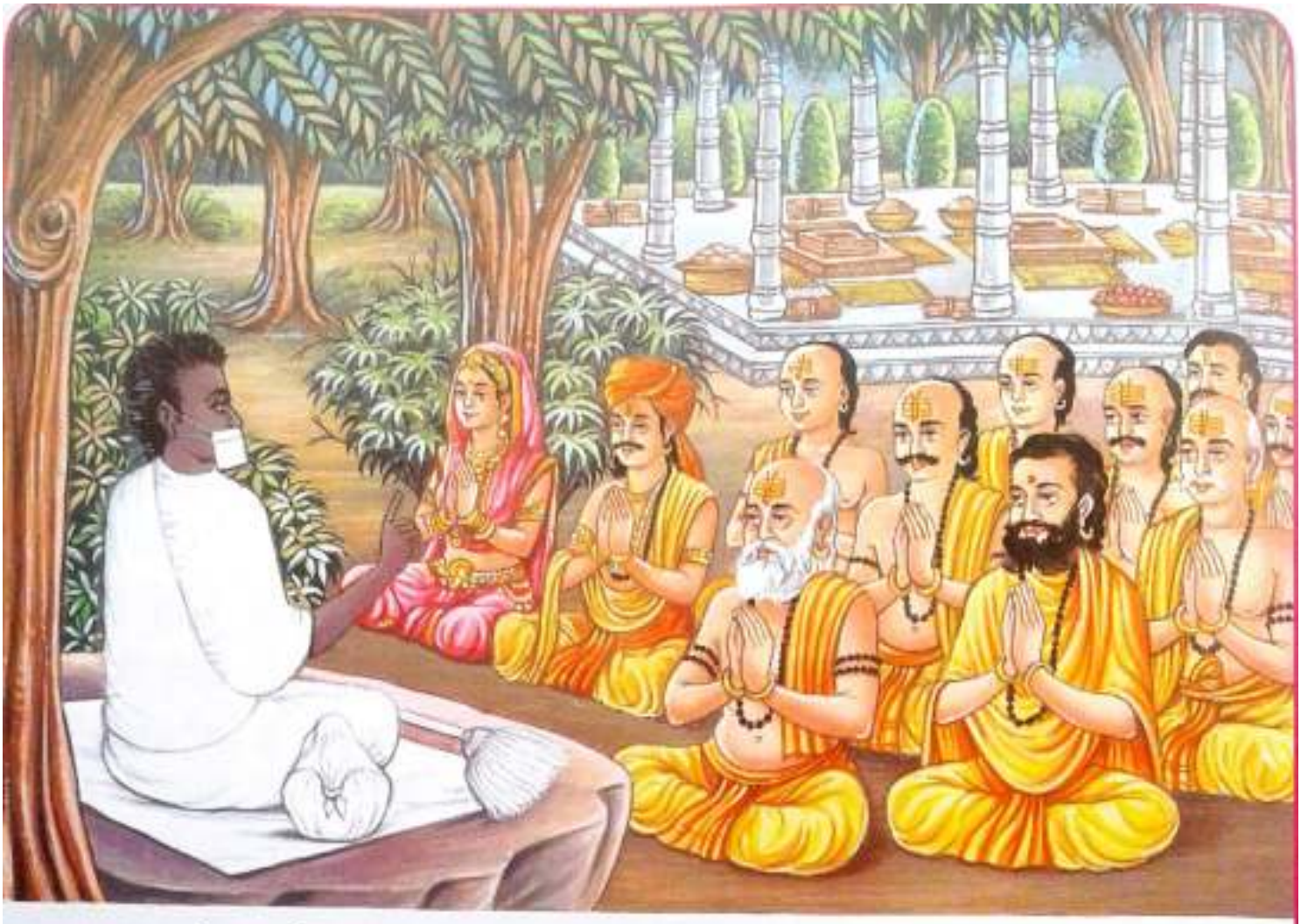

रुद्रदेव एवं अन्य ब्राह्मणों ने उन मुनिवर की इन शिक्षाओं व हितोपदेशों को ग्रहण किया। निम्न कुल व चाण्डाल जाति के होने पर भी हरिकेशीबल मुनि के विचार एवं कार्य महान् थे, संयम और तप उत्कृष्ट था। वर्षों तक उन्होंने निर्मल साधना कर अंतिम समय संलेखना-संथारा करके समस्त कर्मबंधन क्षय किए और मुक्ति को प्राप्त किया।

कथा सार—*प्रस्तुत कथानक उत्तराध्ययनसूत्र के बारहवें अध्ययन में 'हरिकेशीय' के नाम से दिया गया है। इसमें हरिकेशीबल के साधु जीवन अंगीकार करने के पश्चात् हरिकेशीबल मुनि के महाव्रत, समिति, गुप्ति, क्षमा आदि श्रमणधर्म एवं तप-सयंम रूपी साधना का वर्णन किया गया है और जाति-मद में लिप्त लोगों का मिथ्यात्व दूर करके उन्हें सच्चे यज्ञ का स्वरूप समझाया है, हरिकेशीबल मुनि ने बताया है कि संसार में जो अच्छे कर्म करता है वही श्रेष्ठ है। जाति-कुल का मद व्यर्थ है।*

चित्रांकन एवं मुद्रण : संजय सुराना द्वारा पद्मोदय प्रकाशन, आगरा फोन : 0562-2851165, 9319203291

Scanned by CamScanner

श्री जयमल जैन पार्श्व पद्मोदय फाउण्डेशन चेन्नई के ट्रस्टीगण

वंश परम्परागत ट्रस्टी :

अध्यक्ष : श्री ज्ञानचन्द जी मुणोत, चेन्नई
उपाध्यक्ष : श्री भंवरलाल जी लोढ़ा, चेन्नई
उपाध्यक्ष : श्री ए. एन. प्रकाशचन्द जी बोहरा, चेन्नई
उपाध्यक्ष : श्री अमरचंद जी बोकडिया, चेन्नई
उपाध्यक्ष : श्री शांतिलाल जी बोहरा, चेन्नई
कोषाध्यक्ष : श्री नरेन्द्रकुमार जी मरलेचा, चेन्नई
मंत्री : श्री नवरतनमल जी गादिया, चेन्नई

आजीवन ट्रस्टी

- श्री चेनराज जी गोटावत, बैंगलोर
- श्री धरमचंद जी लूंकड, चेन्नई
- श्री उत्तमचन्द जी बोकड़िया, चेन्नई
- श्री विजयसिंह जी पींचा, चेन्नई
- श्री गौतमचन्द जी रूणवाल, चेन्नई
- श्री उत्तमचंद जी बागमार, इरोड
- श्री विजयराज जी छाजेड, सिकन्द्राबाद
- श्री एस. गौतमचन्द जी श्रीश्रीमाल, सिकन्द्राबाद
- श्री सज्जनराज जी कांकरिया, सिकन्द्राबाद
- श्री शान्तिलाल जी कोठारी, हैदराबाद
- श्री बाबूलाल जी कांकरिया, हैदराबाद
- श्री अमरचंद जी चोरड़िया, बैंगलोर
- श्री रिखबचंद जी बोहरा, चेन्नई

卐 चमत्कारी जय जाप 卐

पूज्य जयमल जी हुआ अवतारी, ज्यांरा नाम तणी महिमा भारी।
कष्ट टले मिटे ताव तपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।
पूज्य नामे सब कष्ट टले, वली भूत-प्रेत पिण नाय छले।
मिले न चोर हुवे गुप-चुपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।
लक्ष्मी दिन-दिन बढ़ जावे, वली दुःख नेड़ो तो नहीं आवे।
व्यापार में होवे बहुत नफो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।
अड़ियो काम तो होय जावे, वली बिगड़्यो काम भी बण जावे।।
भूल-चूक नहीं खाय डफो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।
राज-काज में तेज रहे, वली खमा-खमा सब लोक कहे।
आछी जागा जाय रूपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।
पूज्य नाम तणो जो लियो ओटो, ज्यारे कदे नहीं आवे टोटो।
घर-घर बारणे काय तपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।
एक माला नित्त नेम रखो, किणी बात तणो नहिं होय धखो।
खाली विमाण अरु टलेजी सपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।
स्वभक्त तणी प्रतिपाल करे, मुनिराम सदा तुम ध्यान धरे।
कोई परतिख बात मती उथपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।
पूज्य नाम प्रताप इसो जबरो, दुख कष्ट-रोग जावे सगरो।
केई भवां रा कर्म खपो, पूज्य जयमल जी रो जाप जपो।।

नोट—इस चमत्कारी जय जाप को नित्य पढ़ने से सम्यक्त्व सुदृढ़ बनता है।

पुस्तक प्राप्ति स्थान :

श्री जयमल जैन पार्श्व पद्मोदय फाउण्डेशन, चेन्नई
3A, Vepery Church Road, Chennai-600 007
Mob. : 9444143907

श्री जय ध्वज प्रकाशन समिति (शाखा-कार्यालय)
श्रुताचार्य चौथ स्मृति भवन, 39, विनोद नगर, ब्यावर (राज.)

श्री जयमल जैन पार्श्व-पद्मोदय राष्ट्रीय शिविर ट्रस्ट
C/o, श्री चैनराज जी गोटावत, एम. सी. गोटावत इलेक्ट्रीकल्स, वी. एस. लेन, चिकपेट, बैंगलोर-560 053. फोन : 26571898, 26577455

Scanned by CamScanner

स्वाध्याय-ध्यान प्रणेता, डॉ. पदमचन्द्र जी म. सा. के प्रवचन एवं संपादित पुस्तकें

सचित्र बड़ी साधु वन्दना भाग- 1-5

आचार्य श्री जयमल जी म. की अमर रचना बड़ी साधु वन्दना की एक-एक कड़ी पर विस्तृत विवेचन करने वाले प्रवचन।

(प्रवचनकार : डा. पदमचन्द्र जी म. सा.)

रंगीन चित्रों द्वारा प्रत्येक गाथा का सजीव चित्रण किया गया है।

जय ध्वज

एक भवावतारी आचार्य श्री जयमल जी म. सा. का सम्पूर्ण जीवन चरित्र पाँच भागों में प्रकाशन की योजना तीन भाग प्रकाशित हो चुके है। चौथा भाग प्रेस में है।
प्रत्येक भाग का मूल्य : 350/- है

बड़ी साधु वन्दना सचित्र कथाएं

बड़ी साधु वन्दना में दिये गये ऐतिहासिक चरित्रों के जीवन पर रंगीन सचित्र कथायें।
कुल 108 भाग प्रकाशन की योजना
प्रत्येक भाग का मूल्य : 25/- है।

प्रत्येक भाग पक्की बाईडिंग युक्त 400 पृष्ठों का है।

- प्रत्येक भाग का मूल्य : 350/- है
- पाँचों भागों को एक साथ मंगाने पर मूल्य : 1250/-

एक भवावतारी आचार्य श्री जयमल जी म. सा. का संक्षिप्त जीवन चरित्र एवं स्वाध्याय हेतु नमोकार मंत्र, जयजाप, पच्चीस बोल स्तोक संग्रह इत्यादि प्रकाशित साहित्य

पुस्तकें मंगाने के लिऐ निम्न पते पर अपना आर्डर भेजें।

श्री जयमल जैन पार्श्व-पद्मोदय फाउण्डेशन, चेन्नई

78, MILLERS ROAD, KILPAUK, CHENNAI - 600 010. CELL : 9444143907, 9841047607

Scanned by CamScanner